रचयिता—
प्रसिद्ध वक्ता मुनि श्री
चौथमलजी महाराज

अठारह पाप-निषेध

प्रकाशक—
श्रीयुत सेठ गँभीरमलजी इन्द्रमलजी,
रतलाम.

द्वितीयावृत्ति २००० } मूल्य =) { वीराब्द २४५६ संवत् १९८७

प्रकाशकः—

श्रीयुत सेठ गँभीरमलजी इन्द्रमलजी, रतलाम
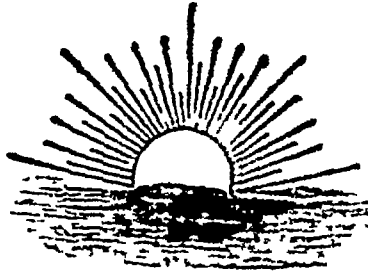
मुद्रक—

मैनेजर—

श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम

प्रकाशक का वक्तव्य

मेरी कई दिनों से यह हार्दिक लगन लगी हुई थी, कि मैं मुनिराज से इन अष्टादश पापोपचारों को मांगू और उन्हें जनता के हित के लिये प्रकाशित करवा दूँ। मेरी यह लगन, उस समय और भी अत्यधिक रूप में मेरे हृदय के अन्तर्प्रदेश में खलमली मचा उठती थी, जब कि मैं मुनिराज के दर्शनार्थ समय समय पर जाता, और उन के प्रवचनों के बीच बीच में इन पापोपचारों के हित-चिन्तन हवालों को, हमारी दैनिक जीवनी के हरम (अन्तःपुर) में हट्टे-कट्टे और नमक हलाल हवालदारों के रूप में स्थान स्थान पर अड़े पाता। दिनों दिन मेरी यह इच्छा अधिकाधिक बढ़ती ही गई, एक दिन इस इच्छा ने सत्साहस का सेहरा अपने सिर बांध, विनीत भाव से मुनिराज के चरणों में अपना अभिप्राय कह सुनाया। पाठको! सन्त तो हृदय से कोमल होते ही हैं, या यूँ कहो, कि उनका जीवन ही परार्थ होता है। जैसे कहा भी है कि-

"पर उपकार वचन मन काया।
सन्त सहज सुभाव खगराया॥"
और-"निज परिताप द्रवई नवनीता।
पर दुख द्रवहि सो सन्त पुनीता॥"

बस, मुनिराज ने मेरी इच्छा के अन्तर्नाद को सुनते

ही उसे अपना सदाश्रय दे दिया । फिर मैं तो चटपटी में पहले से था ही ! अपनी इच्छा और आशा को फलवती होती देख, मैं फूले अंग न समाया; और उसी समय, मुनिराज के भी मुख से, इस पुस्तक के अष्टादश पापोपचारों को उद्धृत करता बना । इतना ही नहीं; तत्काल ही में प्रेसवाले के पास भी गया; और उस प्रेस की सफाई, छपाई, शुद्धता आदि का कुछ भी खयाल न करता हुआ, उसे उसी समय छपवाने के लिए भी दे दी । पाठको ! और तो और, किन्तु मैं उस खुशी के आवेग में; अपने उदालना और अति कृपालु इस के रचयिता मुनिराज तक को, धन्य वाद देना भूल गया, जिस की एक मात्र महती कृपा ही से, ये अष्टादश पापोपचार मुझे तथा पाठकों को सम्प्राप्त हो सके । किन्तु, "बररे बालक एक सुभाऊ। इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ ॥" के नाते; मुझे सन्त-हृदय का पूर्ण विश्वास था, कि मेरी इस दिल की धधकती हुई लौ के समय में, जोभी कुछ मुझ से अपराध बन पड़ेंगे, मुनिराज उन्हें क्षमा और दया की दृष्टि से देखेंगे । हुआ भी ठीक वैसा ही । पुस्तक छप कर पाठकों के हाथों पहुंची । वहां उस का अनादर या समादर हुआ, यह मैं कह नहीं सकता। किन्तु, हां, अनुमान और अनुभव के आधार पर, यह तो अवश्य ही कहा जा सकता है, कि बहु-संख्यक पाठकों ने

इसे किसी भी पर-हित या स्व-हित के नाते से अभी तक लगातार मंगाना जोरों से जारी रख छोड़ा है।

इसी मांग-क्रम के नाते, हमारे कृपालु पाठकों का इसकी ओर दिली प्रेम देख कर, हम इस बार पहले से इसे, एक विशेष रूप में उन के हाथों रख रहे हैं। इस बार, हमने प्रयत्न किया है, कि इस के पापोपचार रामबाण नुसखे सरलातिसरल रूप में, सुन्दर से भी सुन्दर जायके के साथ, और शुद्ध से भी शुद्ध रूप की बनावट में संसार के हाथों दिये जायं; जिस से एक अनपढ़ भी इन के द्वारा ठीक उसी रूप में अपनी शारीरिक और मानसिक उन्नति कर सके, जिस तरह एक विद्वान् उसे अपना कर, अपने जीवन और जन्म को जगती तल में श्रेष्ठ बनाता है। इस प्रयत्न के घाट सफलता-पूर्वक उतरनेमें हमने अपने जैन जगत् के परम साहित्यानुरागी, और कई ग्रन्थों के लेखक तथा सङ्ग्रहकार, पण्डित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज से प्रार्थना की थी। तदनुसार, उन्होंने इस का सरलातिसरल अनुवाद हमें कर दिया, और इसे हर प्रकार से शोध कर इस के साथ अन्तर्कथाओं को जोड दिया। अस्तु। हम उन के हृदय से कृतज्ञ हैं। आशा है, कृपालु पाठक इस पुस्तक की काया-पलटाने की हमारी इस धृष्ट किन्तु जन हितकारी कल्पना को क्षमा और सन्तोष की दृष्टी से देखेंगे।

प्रकाशक.

॥ श्री ॥

खुश खबर ।

सर्व सज्जनों को विदित हो कि वैशाख सुदि ५ संवत् १९८९ को श्रीजैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति ने "श्रीजैनोदय प्रिंटिंग प्रेस" के नाम से एक प्रेस कायम किया है। इस प्रेस में हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी का काम बहुत अच्छा और स्वच्छ तथा सुन्दर छापकर ठीक समय पर दिया जाता है। छपाई के चारज़ेज़ वगैरा भी किफायत से लिये जाते हैं।

अतःएव धर्म प्रेमी सज्जन, छपाई का काम भेजकर धर्म परिचय देने की कृपा करेंगे, ऐसी आशा है।

निवेदकः—

मैनेजर

श्रीजैनोदय प्रिंटिंग प्रेस,

रतलाम.

॥ ॐ ॥

वन्दे वीरम् ।

अ-ष्टा-द-श—पाप—निषेध ।

———:O———

शैर

(पाप से बचने की गजलें इस के अन्दर श्रेष्ठ हैं)

❀ वीर—स्तुति ❀

(तर्ज- मेरे स्वामी बुलालो मुगत में मुझे।)

महावीर से ध्यान लगाया करो; सुख सम्पत इच्छित पाया करो ॥ टेक ॥ क्यों भटकता जगत में; महावीर सा दूजा नहीं । त्रशला के नंदन जगत-वन्दनं; अनन्त ज्ञानी है वही । उनके चरणों में शीश नॅवया करो ॥ महा० ॥१॥ जगत-भूषण विगत-दूषण; अधम—उधारण वीर है । सूर्य से भी तेज है; सागर सम गम्भीर है । ऐसे प्रभु को नित उठ ध्याया करो ॥ महा० ॥ २ ॥ महावीर के परताप से; होती विजय मेरी सदा । मेरे वसीला है उन्हीं का! जाप से टले आपदा । ज़रा तन मन से लौव लगाया

करो ॥ महा० ॥ लसानी ग्यारह ठाणा; आया चौरासी साल है। कहे चौथमल गुरु कृपासे; मेरे वरते मङ्गल माल है। सदा आनंद हर्ष मनाया करो ॥ महा० ॥ ४ ॥

भावार्थः–महावीर भगवान् से अपनी लौ लगाया करो (और) मनचाही सुख सम्पति पाया करो। (महावीर को छोड़ कर) संसार में क्यों भटकते फिरते हो; महावीर के समान कोई दूसरा (यहां) नहीं हैं। त्रशला के नन्दन जगत् म त्र के पूजनीय हैं और वे अपार ज्ञानी हैं। उन के चरणों में वन्दना किया करो ॥१॥ (वे) जगत् के भूषण, दोषों से रहित, और पापियों का उद्धार करने वाले वीर हैं। उन का तेज सूर्य से भी अधिक है; वे समुद्र के समान गम्भीर हैं। ऐसे प्रभु का, सदा उठकर ध्यान कियाकरो ॥ २ ॥ (वह) महावीर (ही) का प्रता है, जिससे मेरी विजय होती है (अर्थात् मुझे प्रत्येक काम में सफलता मिलती है।) मेरे तो (एक मात्र) उन्हीं का वसीला है। उन का स्मरण करते रहने से (सारी) आपदाएं दूर हो जाती हैं। जरा शरीर और मन को एकाग्र कर के उन का ध्यान किया करो ॥ ३ ॥ संवत् १९८४ वि० के साल में 'लसानी' को ग्यारह ठाणा आये। गुरु की कृपा से चौथमल कहते है, कि मेरे कहने के अनुसार चलने से चारों ओर मङ्गल ही मङ्गल है।

(यों भगवान् के जप-जाप और ध्यान से) सदा आनन्द और हर्ष मनाया करो ॥ ४ ॥

(१)

[हिंसा-निषेध.]

(तर्ज-उठो बहादुर कस कमर तुम धर्म की रक्षा करो।)

दिल सताना नहिं रवाँ; मालिक का फरमान है। खास इबादत के लिये पैदा हुआ इन्सान है ॥ टेक ॥ दिल बड़ी है चीज़ जहां में; खोल के देखो चशम। दिल गया तो क्या रहा; मुर्दा तो वह समशान है (" इनसान " है-पाठान्तर है) ॥ १ ॥ जुल्म यहां करता उसे; हाकिम भी देता है सजा। माफी नहीं हरगिज कहीं, * कानून के दरम्यान है ॥ २ ॥ आराम अपनी जान को; जिस भांति है प्यारा लगे। आन को तूं समझ वैसे; क्यों बना नादान है ॥ ३ ॥ नेकी का बदला नेक है; कुरान भी यह कह रही। मत बदी पर कस कमर तूं; क्यों हुआ बेइमान है ॥ ४ ॥ बे-गुनहगू दोजख में गीरफ्,-तार तो होगा सही।

---

*(अ)-किसी को गाली देना किसी का अपमान करना या दिल दुखाना, आदि के लिये दो मा० की सख्त कैद की सजा। कानून धारा ३५२

(ब)-खून करने वाले को मृत्यु की शिक्षा (फांसी) कानून धारा ३०२।

(स)-जबर्दस्ती से बेगार करने वाले को, व शक्ति से ज्यादा काम लेनेवाले को एक साल की कैद की सजा। कानून धारा ३७४

गिनती वहां होती नहीं; फिर भूप या दीवान है ॥ ५ ॥ बैठ कर तू तख़्त पर; दुखियों की तैने नहीं सुनी । है फरिश्ते पीटते वहां; होता बड़ा हैरान है ॥ ६ ॥ गले कातिल के वहां; फेरायंगे लेके छुरा । इनसान होके ना गिने; यह भी तो कोई जान है ॥ ७ ॥ रहम को लाके जरा तू; सख्त दिल को छोड़ दे । चौथमल कहे हो भला जो; इस तरफ कुछ ध्यान दे ॥ ८ ॥

भावार्थ—भगवान् का यह हुक्म है, कि-"किसी का दिल सताना अच्छा नहीं है" । इन्सान इस संसार में खास करके भगवान के जप-जाप ही के लिए पैदा हुआ है । आंखों को खोल कर देखो; दुनिया में दिल बड़ी भारी चीज है । यदि दिल ही चला गया; तो फिर क्या रह गया ? अर्थात् वह आदमी जो बे-दिल (निर्दयी) है, श्मशान के मुर्दे के समान है ॥ १ ॥ दुनियाँ का भी यही नियम है, कि जो आदमी यहां जुल्म करता है, हाकिम भी उस को सजा देता है । कानून के अन्दर उस के लिए कभी कोई माफी नहीं है ॥ २ ॥ जिस तरह अपनी जान को आराम अच्छा लगता है, ठीक वैसे ही तू दूसरे को भी समझ ! क्यों नादान बना हुआ है ॥ ३ ॥ कूरान शरीफ में भी लिखा हुआ है, कि भलाई का फल भला (और बुराई का बदला बुरा होता है) । इसलिए तुं

बदी करने पर मत उतर, मत तैयार हो । क्यों बेईमान बना हुआ है ॥ ४ ॥ चाहे फिर कोई राजा हो, या दीवान नरक में उन को अपनी करणी का फल अवश्य भोगना पड़ेगा; वहां किसी का बड़ापन या छोटापन कभी नही देखा जाता ॥ ५ ॥ राजा बन कर भी, तू ने कभी दुखियों की फर्याद को न सुना । इस के कारण देव-दूत वहां तुझे पीटेंगे और तू वहां बड़ा हैरान होगा ॥ ६ ॥ निर्दयी पुरुषों के गले पर वहां छुरे फिराये जावेंगे। भला; आदमी हो कर के भी तू नहीं समझता ? अरे देख ! ये संसारी प्राणी भी तो बेचारे कोई प्राणी हैं ॥ ७ ॥

(२)

(झूठ—निषेध)

(तर्ज़-पूर्ववत्)

सोच नर इस झूठ से, आराम तू नहीं पायगा । हर जगह दुनियाँ में नर, परतीत भी उठ जायगा ॥ टेक ॥ सांच भी गर तू कहे, ईश की खाकर कसम । लोग गपी जानकर, ईमान कोई नाहिं लायगा ॥ १ ॥ क्रोध भय, अरु हास्य, चौथा,—लोभ में हो अन्ध नर । बोलते हैं झूठ उनके—हाथ में क्या आयगा ॥ २ ॥ झूठ पोशीदा रहे कब-लग जरा तुम सोचलो । सत्यता के सामने, शर-मिन्दगी तू खायगा ॥ ३ ॥ झूठे बोले शख्श की दोजख

में है कतरे जबां । बोलकर जावे बदल उसका फल वहां पायगा ॥ ४ ॥ बोलता है झूठ जो तूं, जिस लिए ऐ बेहया वह सदा रहता नहीं. देखते खिरलायगा ॥ ५ ॥ सब धर्म शास्त्रन देखलो, है झूठ का सौदा मना । इसलिये तज झूठ को, इज्जत तेरी बढ़ जायगा ॥६॥ गुरु पाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन लो जरा । धार ले तू सत्य को, आवागमन मिट जायगा ॥ ७ ॥

भावार्थ—ऐ मनुष्य ! तूं विचार कर के देख; इस झूठ से तूं कभी आराम नहीं पावेगा । इसी झूठ के कारण से दुनियां में प्रत्येक जगह से तेरा विश्वास भी उठ जायगा । फिर तूं यदि भगवान की सौगन्द खा कर भी सत्य कहेगा, तब भी लोग तुझे गपी ही समझते रहेंगे; और तेरी सचाई का किसी को एतबार ही न होगा ॥१॥ फिर, जो लोग क्रोध, भय, हंसी और लोभ के वश अन्धे हो कर झूठ बोलते हैं, उनके हाथ आनेवाला ही क्या पड़ा है ! ॥२॥ झूठ कब तक छिपाने से छिपेगा ! जरा तुम सोचो तो सही । एक न एक दिन सत्य के सामने इस की पोल खुल जायगा; और तूं बड़ा ही शरमायगा ॥ ३ ॥ जो शख्श झूठ बोलने वाला होता है, उस की नरक में जबान कतरी जाती है । और जो कोई बात कहकर के बदल जाता है, उसका भी फल वह वहां अवश्य पाता ही है ॥ ४ ॥ ऐ बेशरम जिसके

लिए तूं झूठ बोलता है वह सदा नहीं रहता, देखते ही देखते वह तो मटियामेट हो जाता है ॥ ५ ॥ जितने भी धर्म—शास्त्र है सभी एक स्वर से झूठ को बुरा बतलाते हैं इसलिए, झूठ से तूं भी परहेज कर, तू झूठ बोलना छोड़दे यों करने से तेरी इज्जत बढ़ जावेगी ॥ ६ ॥ गुरु-चरणों की कृपा का भरोसा मन में रख कर चौथमल जो कहता है, उसे भी जरा सुनलो कि यदि तूं सत्य को धारण करले यदि तू सत्य बोलना सीख जाय तो बार बार के जीवन और मरण ही की झञ्झट ही से छूट जायगा ॥ ७ ॥

(३)

[चोरी—निषेध ।]

(तर्ज.-पूर्ववत्)

इज्जत तेरी बढ जायगी, तू चोरी करना छोड़ दे ।
मान ले मेरी नसीहत, तू चोरी करना छोड़ दे ॥ टेक ॥
माल लख कर गैर का दिल चोर का आशिक हुआ ।
साफ नीयत ना रहे, तूं चोरी का करना छोड़ दे ॥ १ ॥
दृष्टि उस की चौ तरफ, रहती है मांनिद चीलके । परतीत कोई ना करे, तूं चोरी करना छोड़दे ॥ २ ॥ पोलीस से छिपता फिरे, इक दिन तो पकड़ा जायगा । बेंत से मारे तुझे, तू चोरी का करना छोड़दे ॥ ३ ॥ नापने अरु जोखने में, चोरी तू कर की करे । रिश्वत भी खाना है यही । तू चोरी का करना छोड़दे ॥ ४ ॥ अन्याय के धन से

कभी, आराम तो मिलता नहीं। दीन, दुनियाँ में मना, तू चोरी का करना छोड़दे ॥५॥ नुक़सान घर किस के करे, आह लगती है जबर। खाक में मिल जायगा, तू चोरी का करना छोड़दे ॥ ६ ॥ सबर कर पर-माल से, हक बात पर क़ायम रहे। चौथमल कहता तुझे, तू चोरी का करना छोडदे ॥७॥

भावार्थ—तू चोरी का करना छोड़दे; तेरी आबरु बढ जायगी। मेरी नसीहत को मानले; तू चोरी का करना छोड़दे। दूसरे का माल देखकर चोर का दिल ललचाने लगता है। इससे नीयत साफ नहीं रहती; तू चोरी का करना छोड़दे ॥ १ ॥ जो × चोरी करने वाला है, उसकी

× (अ,—खोटे तोल या नाप रखने वाले को एक साल की सख्त कैद की की सजा। कानुन धारा २६४।

(ब) —पहली बार महसूल न चुकाने वाले का माल जब्त करलिया जाता है। पीछा नहीं मिलता। दूसरी दफा महसूल न चुकाने वाले का माल जप्त करके उस पर दण्ड और अलग किया जाता है। तीसरी दफा ऐसा अपराध करने पर माल तो जप्त कर ही लिया जाता है, पर सख्त कैद की सजा भी उसे दी जाती है।

(स)—रिश्वत लेनेवाले और देनेवाले दोनों गुनहागार हैं जिनको ३ साल की सख्त कैद की सजा। कानून धारा १६१।

(द) चोरी का माल लेनवाले को छ मास की सख्त कैद की सजा और १०००) तक दण्ड। कानून धारा १८८

(इ) सेठ की चोरी करनेवाले नौकर को ७ साल तक की सख्त कैद की सजा कानून धारा ३७६।

(फ) किसा का माल छिपाने वाले को तीन साल तक की सख्त कैद की सजा। कानून धारा ,७६।

निगाह चील के मांनिद चौतरफा रहती है। उस का कोई भी भरोसा नहीं करता। इसलिए तु चोरी का करना छोड़ दे॥ २॥ चोर चाहे कितना ही छिपता फिरे एक न एक दिन उसके पाप की पोल अवश्य खुलती है; और तब पुलिस के द्वारा पकड़ा जाता है। फिर बेतों आदि की मार भी उसे खानी पड़ती है। इसलिए, तू चोरी का करना छोड़दे॥ ३॥ फिर नापने जोखने में भी तू चोरी करता है; इसी प्रकार महसूल को चुराने की चेष्टा तू किया करता है। यों चोरी करना एक प्रकार का रिश्वत ही खाना है। इसलिए तू चोरी का करना छोड़दे॥४॥ ऐ भाई! अन्याय और अधर्म पूर्वक कमाये हुए धन से कभी आराम तो नसीब होता नहीं! फिर यों चोरी आदि के द्वारा धन कमाना, दीन और दुनियां सभी की निगाहों से गिरना है। इसलिए तू चोरी का करना छोड़दे॥ ५॥ अगर तू किस के घर नुक्शान करता है तो उस की आत्मा तुझे सदा कोसती रहेगी। जिससे तू खाक में मिल जायगा। इसलिए तू चोरी का करना छोड़दे॥ ६॥ ए भाई! पराये धन से सब्र कर; अर्थात् तू उसकी इच्छा मत कर। जो हक की बात हो या जो न्याय और धर्म से तुझे मिले उसी पर सन्तोष कर! चौथमल तुझे (बार बार) कहता है, कि चोरी करना छोड़दे॥ ७॥

[४]

[पर-स्त्री-निषेध]

(तर्ज-ःपूर्ववत्)

लाखों कामी मिट चुके; पर--नार के परसङ्ग से । मुनिराज कहते तुम बचो, परनार के परसङ्ग मे ॥ टेक ॥ दीप-लौ पर पड़ पतंग, वे मौत मरता है जिमी । त्योंहि कामी कट मरे, परनार के परसङ्ग से ॥ १ ॥ पर-नार का जो हुश्न है, वह अग्नि के इक कुण्ड सम । तन, धन, सब को होमते, परनार के परसङ्ग से ॥ २ ॥ झूठे निवाले पर लुभाना, इनसान को लाजिम नहीं । सुजाक गर्मी से सड़े, पर-नार के परसङ्ग से ॥ ३ ॥ चार सौ सत्ताणुवें, कानून में है इक दफा । * दण्ड हाकिम से मिले, पर--नार के परसङ्ग से ॥ ४ ॥ जैन—सूत्रों में मना, औ मनुस्मृति भी

---

* (अ) स्त्री की लज्जा के लूटनेवाले को दो साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ३५४ ।

(ब) स्त्री की इच्छा के विरुद्ध भोग भोगनेवाले को दस साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ३७६ ।

(स) छोटी उमर की स्व-स्त्री के साथ भी भोग भोगनेवाले को दस साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ३७६ ।

(द) पुरुष पुरुष के साथ, स्त्री स्त्री के साथ, या पशु के साथ भोग भोगने वाले पुरुष को दस साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ३७७ ।

(इ) गर्भ-पात करने व करानेवाले को तीन व सात साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ३१२ ।

देख लो। कूरान, बाइबल में लिखा, परनार के परसङ्ग से ॥ ५ ॥ कीचक रावण चल बसे परनार की ताक में। मणीरथ भी मर मिटा, पर नार के परसङ्ग से ॥ ६ ॥ विष बुझी तलवार से, यवन मुल्जिम बदकार के। बौछार की हजरत वली पर, परनार के परसङ्ग से ॥ ७ ॥ कुत्ते को कुता काटता, कत्ल नर नर को करे। पल में मुहब्बत टूटती, परनार के परसङ्ग से ॥ ८ ॥ किसलिए पैदा हुआ ऐ बेहया कुछ सोच तू। कहे चौथमल अब सब्र कर, पर नार के परसङ्ग से ॥ ९ ॥

भावार्थ—लाखों कामी पुरुष, पराई स्त्री के प्रसङ्ग से तहस-नहस हो चुके। अतः सन्तजन तुम्हें कहते हैं, कि तुम पराई-स्त्री के प्रसङ्ग से बचे रहो। जिस तरह दीये की लौ पर पड़कर पतङ्ग विना मौत के मर मिटता है, ठीक उसी तरह, कामी पुरुष भी पराई स्त्री के प्रसङ्ग से कट मरते है ॥ १ ॥ पराई-स्त्री का सौन्दर्य-दर्शन अग्नि के एक कुण्ड के समान है। और जिस भांति अग्नि-कुण्ड में गिर कर कोई भी चीज़ खाक हो जाती है, उसीतरह, कामी पुरुष पराई-स्त्री के प्रसङ्ग से अपने तन धन और सर्वस्व को होम देते हैं ॥ २ ॥ झूठे निवाले पर, किसी पुरुष को लुभाना योग्य नहीं है। क्यों कि, झूठे कौर पर तो बारी, वायस श्वान लुभाया करते हैं। जैसे, कहा है कि—

"झूठी पातर भखत है, वारी वायस श्वान"

प्रवीणराम

(ओड़छा के महाराज की वैश्या)

फिर, पराई-स्त्री के प्रसङ्ग से लोग सूजाक आदि तरह तरह के भयङ्कर और शरमिन्दगी पैदा करने वाले रोगों में भी तो फँस जाते हैं॥ ३ ॥ कविता-कामिनी-कान्त महा-कवि 'शङ्कर' ने पतुरियां के फन्दे में किसी पुरुष को फँसा हुआ देखकर उसे उसी की स्त्री के द्वारा कितना अच्छा कह-लवाया है! प्रसङ्ग वश उसे हम यहां उद्धृत किये दिये हैं—

सैयाँ न ऐसी नचावो पतुरियां।
गाने पै रीझौ वजाने पै रीझौ,
बन्दी की छातीमें छेदो न छुरियां
पापो की पूँजी पचैगी न प्यारे,
खाते फिरौगे हकीमो की पुरियां॥
डोलेंगे डाली डुलाते डुलाते.
हाथों में पूरी न होंगी अँगुरियां।
जो हाथ 'शङ्कर' दशा होगी ऐसी,
तो मेरी कैसे वचाय लोगे चुरियां॥
—'अनुराग-रत्न'।

अर्थात् ऐ स्वामी! पतुरियां को इस तरह आप न नचाओ उनके झञ्झट में यों न फँस जाओ। चाहे, आप उनके गाने और वजाने पर रीझा करो, परन्तु मुझ दासी की छाती में यों छुरियां न छेदो; मुझे अपमान और

वियोग की आगी में यों न जलाओ । ऐ प्यारे ! यह पापों की पूंजी, जो तुम पराई-स्त्रियों के प्रसङ्ग से कमा रहेहो, किसी हालत में पच न सकेगी ! इस का नतीजा यों होगा, कि तुम हकीमों डाक्टरों, वैद्यों आदि के यहां भटकते फिरोगे; और उन की पुड़िया खाते फिरोगे । इतना ही नहीं, वन में, वृक्षों की डाली डाली पर, तरह तरह की जड़ी-बूंटियाँ और पत्तों आदि के लेने के लिए डुलाते फिरोगे; और उस समय कोढ़ आदि असाध्य और महान् भयङ्कर रोगों के कारण तुम्हारे हाथों में पूरी अंगुलियां भी न होंगी । हाय ! यदि आप की ऐसी दशा हो गई ! तो फिर आप मेरी सुहाग की चूड़ियों की रक्षा कैसे करोगे ! आप असमय में ही यहां से ' '— ।"

हमारे आज के कानून से भी पराई—स्त्री को बद-नीयत से देखना मना है । उस के लिए कानून में ४९७ नम्बर की धारा निर्धारित है । पराई-स्त्री के प्रसङ्ग से हाकिम से दण्ड मिलता है ॥ ४ ॥ फिर क्या जैन-सूत्र, और क्या मनुस्मृति, क्या कुरान और क्या बाइबल सभी में पराई-स्त्री का प्रसङ्ग करना मना है ॥ ५ ॥ जैसे, कहा है—

"तप्ताङ्गार समा नारी घृत-कुम्भ समः पुमान् ।
तस्मात् वह्निं घृतं चैव नैकत्र स्थापयेद् बुधः ॥"

अर्थात् स्त्री जलते हुए अंगार की तरह है; और पुरुष घी के घड़े के समान है । इस लिए आग और घी दोनों को बुद्धिमान् लोग एक जगह न रक्खें ।

और—

"पश्यति परस्य युवती सकाममपि तन्मनोरथं कुरुते ।
ज्ञात्वैव तदप्राप्तिं व्यर्थं मनुजोहि पाप भाग भवति ॥"

अर्थात् मनुष्य दूसरे की युवती स्त्री को देखता है; और यह जानते हुए भी कि वह मुझ को मिलगी नहीं, कामातुर होकर उस के पानेकी इच्छा करता है ! अपने इस (निन्दनीय)व्यवहार से वह व्यर्थ ही पाप का भागी बनता है ।

और भी कहा है-

The women are the flames of passion burning with the fuel of beauty Lustful men throw into that fire their wealth and health.

अर्थात् पर-नारियां सुन्दरता रूपी ईंधन से जलती हुई प्रचण्ड कामाग्नि है । कामी पुरुष इस अग्नि में अपने यौवन और ध्यान की आहुति देते है ।

और भी कहा है, कि—

"Beauty of the women is a witch, against whose charms faith melteth into blood." ... -Much Ado n. I.

अर्थात् परनारियों की खूबसूरती वह जादूगरनी है, जिस के जादू से ईमान का खून हो जाता है।

फौन्टेनेली महोदय कहते हे--

"A beautiful woman is the "HELL" of the soul the "PURGATORY" of the purse and the "PARADISE" of the eyes."

अर्थात् सुन्दरी कामिनी आत्मा का नरक, सम्पति का नाश और आंखों का स्वर्ग है। आदि।

कीचक और रावण पराई स्त्रियो की ताक में लगे और इसी लिए उन का नाश हुआ। मणीरथ भी पर-नारि के प्रसंग ही से मर मिटा ॥ ६॥ पराई-स्त्री के प्रसंग वश ही एक दुष्ट यवन मूल्जिम ने हजरत वली पर विष--बुझी तलवार से वार किया था ॥ ७॥ इसी पर-स्त्री के प्रसङ्ग--वश एक कुत्ता दूसरे कुत्ते को काटता है; और एक मनुष्य दूसरे का खून पिता हुआ नजर आता है; और इसी निन्दनीय काम के आधीन हो जाने पर वर्षों की प्रीति पल-भर में टूट जाती है ॥ ८ ॥ इस लिए, चौथमल कहता है, कि ऐ बशर्म ! तू संसार में किस लिए पैदा हुआ है, जरा सोच ! और पराई-स्त्री के प्रसङ्ग से अब तो सब्र कर!! ॥ ६ ॥

[५]

(धन का दुरुपयोग निषेध ।)

(तर्ज-पूर्ववत्)

क्यों पाप का भागी बने, ऐ समन धन के लिए । जुल्म करता गैर पर ऐ सनम धन के लिए ॥ टेक ॥ तमन्ना तेरी बढ़ी यों, एक हलाल गिनता नहीं । छोड़ के आजीज को, परदेश जा धन के लिए ॥ १ ॥ स्वप्न अन्दर भी न देखा, ना नाम से जाना सुना । गुलामी कहो उस की करे, देख लो धन के लिए ॥ २ ॥ फकीर साधू पास जा, खिदमत करे कर जोड़ के । बूटी को फिरता ढूंढता तू, ऐ सनम् धन के लिए ॥ ३ ॥ इस के लिए भाइ-बन्धुओं से, मुकदमा बाजी करे । कोरटों के बीच में तूं, घूमता धन के लिए ॥ ४ ॥ इस के लिए कर खून चोरी, फेर जावे जेल * में । झूठी गवा देता बिगानी, ऐ सनम धन

* (अ)-खोटी सौगन्द खानेवाले को छः मास तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा १७८ ।

(ब)-दूसरे का भूला हुआ माल खर्च करनेवाले को दो साल तक की सख्त कैदकी सजा । कानून धारा ४०३ ।

(स) मिली हुई वस्तु उस के मूल मालिक को न देने से व उसके मालिक को न ढूंढनेवाले को दो साल तक की सजा । कानून धारा ४०३ ।

(द) रुपये उधार लेकर वापस न देने से दो साल तक की सख़्त कैद की सजा । कानून धारा ४१५ ।

के लिए ॥ ५ ॥ तकलीफ क्या कमती उठाई, जिनरक्ख औ जिन-पाल ने। सेठ सागर प्राण खोया, नीरधि में धन के लिए ॥ ६ ॥ फिसाद की तो जड़ बताई; माल और औलाद को। कुरान के अन्दर लिखा है, देखलो धन के लिए ॥ ७ ॥ भगवान श्री महावीर ने भी, मूल अनरथ का कहा। पुराण में भी है लिखा, नाश इस धन के लिए ॥ ८ ॥ गुरु-पाद के परसाद से; चौथमल यों कह रहा। धार ले सन्तोष को तू, मत मरे धन के लिए ॥ ९ ॥

भावार्थः--ऐ प्यारे ! [तू] धन के लिए क्यों पाप का भागी बनता है ! ऐ प्यारे ! [तू] इसी धन के लिए दूसरों पर जुल्म करता है (यह ठीक नहीं) ! इस धन के लिए तेरी इच्छा ऐसी बढ़ी हुई है, कि तू हलाल और हराम जरा भी कुछ नहीं गिनता; और इस धन ही के लिए तू अपने स्नेहियों को छोड़ कर परदेश में जाता है ॥ १ ॥ जिस पुरुष को कभी स्वप्न में भी न देखा हो; जिस का कभी नाम तक जाना, सुना न हो; कहो तो, धन के लिए मनुष्य उस की भी गुलामी करने को उतारू हो जाता है ॥ २ ॥ ऐ प्यारे तू ! इसी धन के लिए (गली गली के) फकीरों और साधुओं के पास जाता है; हाथ जोड़ कर उन की टहल-चाकरी करता है और (वन वन की) जड़ी बूंटियां को ढूंढ़ता फिरता है ॥ ३ ॥

तू इसी धन के लिए भाई बन्धुओं से मुकदमाबाजी करता है। और पैसे पैसे के लिए कोर्टों के बीच घमता फिरता है ॥ ४ ॥ इसी धन के लिए तू चोरी और बटमारी करता है; खूनखच्चर मचाता है और फिर जेल मे जा कर सडता है। तथा, ऐ प्यारे इसी चण-भङ्गुर धन के लिए, तू गीता और गङ्गा तथा कुरान को हाथों में ले कर दूसरों के लिए झूठी गवाहें कोर्टों में देता फिरता है ॥ ५ क्या जिनरक्ख और जिन पाल ने इसी धन के लिए कम तकलीफें उठाई हैं ? सेठ सागर ने भी तो इसी धन के लिए समुद्र में अपने प्राणों को गंवाया था ॥ ६ ॥ देखो, कुरान शरीफ भी तो कह रही है, कि माल और औलाद यही दो चीजें संसार में सारी फिसाद की जड़ें हैं ॥ ७ ॥ श्री भगवान महावीर ने भी तो इस धन को अनर्थ का मूल कह कर पुकारा है और पुराण भी इस बात का जगह जगह प्रमाण दे रहे हैं, कि यही धन संसार के सर्व-नाश का कारण है ॥ ८ ॥ इस लिए, चौथमल गुरु-चरणों की शरण ले कर तुझे बार बार चिताता है, कि तू संतोष को धार ले और धन के लिए हाय हाय मत कर ॥ ९ ॥

(६)

[गजल क्रोध (गुस्सा) निषेध पर]

(तर्ज-पूर्ववत्)

आदत तेरी गई बिगड़, इस क्रोध के परताप से। अजीज भी बद मानते, इस क्रोध के परताप से ॥ टेर ॥ दुशमन से बढ़ कर यही, मोहब्बत छुड़ावे मिनिट में। सर्प माँनिंद डरे तुझ से, इस क्रोध के परताप से ॥ १ ॥ सलवट पड़े मुँह पर तुरत, कँपे माँनिंद जिन्द के । चश्म भी कैसे बने, इस क्रोध के परताप से ॥ २ ॥ जहर फाँसी को खा, पानी में पड़ कर मर गये। वतन कर गये तर्क कई, इस क्रोध के परताप से ॥ ३ ॥ बाल बच्चों को भी माता, क्रोध के वश फेंकदे। कुछ सूझता उस को नहीं, इस क्रोध के परताप से ॥ ४ ॥ चण्ड-रुद्र आचार्य की, नजीर पर करिये निगाह। सर्प-चंडकोसा हुआ, इस क्रोध के परताप से ॥ ५ ॥ दिल भी काबू ना रहे, नुकसान कर रोता वही। धरम करम भी ना गिने, इस क्रोध के परताप से ॥ ६ ॥ खुद भी जले पर को जलावे, ज्ञान की हानी करे। सूख जावे खून उस का, इस क्रोध के परताप से ॥ ७ ॥ उन के लिये हँसना बुरा, वीराग को जैसे हवा। नाश इन्शाँ हक में समझो, इस क्रोध के परताप से ॥ ८ ॥ शैतान का फरजन्द यह, और जाहिलों का दोस्त है। बदकार

का चाचा लगे, इस क्रोध के परताप से ॥ ९ ॥ इबादत फाकाकशी, सब खाक में देवे मिला । दोजख का पंथ है देखता, इस क्रोध के परताप से ॥ १० ॥ चण्डाल से बदतर यही, गुस्सा बड़ा बेइमान है । कहे चौथमल कब हो भला, इस क्रोध के परताप से ॥ ११ ॥

भावार्थ—ए भाई! इस क्रोध के परताप से तेरी आदत बिगड़ गई। इसी क्रोध के प्रताप से तेरे सनेही लोग भी तुझे बुरा मानते हैं। यह क्रोध, तेरा दुश्मन से भी बढ़ कर दुश्मन है; पल-भर में यह वर्षों की मुहब्बत तुड़ा बैठता है। इसी क्रोध के प्रताप से लोग तुझसे सर्प की भाँति डरते हैं ॥ १ ॥ इस क्रोध के कारण तेरे मुँह पर सल पड़ जाते हैं; और जिन्द की भाँति काँप उठता है। आँखेंभी इस क्रोध के कारण बड़ी ही विचित्र बन जाती है ॥ २ ॥ इसी क्रोध के कारण कई लोग जहर खा कर मर गये! कई पानी मे पड़ कर इस संसार से चल बसे; कई फाँसी को चले गये; और कई लोगों को देश से निर्वासित कर दिया गया ॥ ३ ॥ माता कभी कुमाता नहीं होती, किन्तु इसी क्रोध के आवेश में वह भी अपने बाल बच्चों को गोदी से फेंक देती है; और उस समय उसे अपना पराया कुछ भी नहीं सूझता ॥ ४ ॥ इसी क्रोध के प्रताप से बेचारा चण्ड-रुद्र आचार्य, चण्डकोसा सर्प की योनि को प्राप्त

हुआ; जरा इस के उदाहरण पर भी ध्यान दीजिये ॥ ५ ॥ लोग इसी क्रोध के आवेश में आकर धर्म-कर्म को भी कुछ नहीं गिनते ; नुकसान कर बैठने पर फिर रोते हैं; और उनका अपने दिल पर भी कावू नहीं रहता ॥ ६ ॥ यही क्रोध एक ऐसी आगी है जिस के कारण क्रोधी मनुष्य खुद भी जलता है; दूसरों को भी जलाता है; उस को सदासद विवेक का भी ज्ञान नहीं रहता; और वह सूख कर काँटा सा वन जाता है ॥ ७ ॥ जैसे हँसी मनुष्य के हक मे बुरी है; दीपक को हवा बुझा देती है ; उसी तरह क्रोध से मनुष्य का सत्यानाश मिल जाता है ॥ ८ ॥ इसी क्रोध के कारण मनुष्य शैतान की सन्तान कहलाता है; मूर्खों का दोस्त और वदमाशों का चाचा भी वह वनता रहता है ॥ ९ ॥ मनुष्य इसी क्रोध के कारण भगवान् की वन्दगी और वृत-उपवासों तक को भुला देता है। सचमुच यह क्रोध नरक का रास्ता है ॥ १० ॥ यह क्रोध वड़ा वेईमान है ; चाण्डाल से भी गया गुजरा है। इस-लिये चौथमल कहता है कि इस क्रोध के कारण कव किस का भला हुआ और हो सकता है ? अर्थात् कभी नहीं ॥ ११ ॥

(७)

[गजल गरूर (मान) निषेध]

॥ तर्ज.-पूर्ववत् ॥

सदा यहां रहना नहीं, तू मान करना छोड़दे । शहंशाह भी ना रहे, तू मान करना छोड़दे ॥ टेक ॥ जैसे खिला है फूल गुलशन, अजीजों यां देखले । आखिर तो वह कुँभलायगा, तू मान करना छोड़ दे ॥ १ ॥ नूर से वे पूर थे, लाखों उठाते हुक्म को । पर खाक में वे मिल गये, तू मान करना छोड़ दे ॥ २ ॥ परशु ने चत्री हने शम्भूम ने मारा उसे । शम्भूम भी यां ना रहा, तू मान करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ जरासन्ध औ कंस को, श्रीकृष्ण ने मारा सही । फिर जर्द ने उन को हना, तू मान करना छोड़दे ॥ ४ ॥ रावण से इन्द्र दवा, राम ने रावण हना । न वह रहा ना वे रहे, तू मान करना छोड़दे ॥ ५ ॥ रव का हुकुम माना नहीं, काफिर अजाजिल वन गया । शैतान सब उस को कहें, तू मान करना छोड़दे ॥ ६ ॥ गुरु-पाद के परसाद से, चौथमल विनती करे । आजिजी सब में बढी तू मान करना छोड़दे ॥ ७ ॥

भावार्थ—ऐ संसारी ! एक न एक दिन यहां से अवश्य ही चलना पड़ेगा, ऐसा जान कर तू अभिमान करना, शेखी मारना छोड़दे । बड़े बड़े शहंशाह भी इस पृथ्वी पर न

रहे; वे भी यहां से धर्मशाला के मुसाफिर की भाँति चल बसे। इसलिये तू मान करना छोड़दे। ऐ प्यारे! फूल जिस तरह बगीचे में दो दिन के लिये खिलता है; अन्त में तो कुम्हलाता ही है; इसी तरह हमारी जिन्दगी भी यहां सदा की रहने वाली नहीं है। इसलिये तू मान करना छोड़दे ॥ १ ॥ वे बड़े बड़े लोग, जिन के यश और प्रताप की चारों तरफ धाक थी; और लाखों लोग जिन के हुक्म को उठाते थे : वे भी खाक में मिल गये; वे भी यहां न रहे। इसलिये तू गरूर करना छोड़दे ॥ २ ॥ देख, परशुराम ने क्षत्रियों को तहस-नहस किया; फिर शम्भूम ने उन्हें मार गिराया। पर ऐसा बली शम्भूम भी यहां न रहा। अतः तू अभिमान करना छोड़दे ॥ ३ ॥ फिर, जरासन्ध और कंस को श्रीकृष्णचन्द्रजी ने मारा। और उन्हे भी एक व्याधने मार गिराया। इसलिये तू अभिमान को कभी पास भी न फटकने दे ॥ ४ ॥ इन्द्र को रावण ने दबाया; तो राम ने रावण को मार गिराया। फिर न तो वह रावण ही रहा, और न वे राम ही रहे। इसलिये तू मान करना छोड़ दे ॥ ५ ॥ इसी मान के कारण से अजाजिल ने पैगम्बर साहब का हुक्म नहीं माना; और वह काफिर बन गया, तथा उसे लोग शैतान कह कर पुकारने लगे ॥ ६ ॥ गुरुचरणों

का भरोसा रख कर के चौथमल सब से विनय करता है कि प्रेम हीका सब जगह सन्मान होता है। इसलिये तू मान करना छोड़दे ॥ ७ ॥

(८)
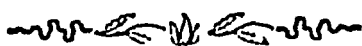
[गजल दगाबाजी (कपट) निषेध]

(तर्जः-पूर्ववत्)

जीना तुझे दिन चार का, तू दगा करना छोड़दे। पाक रख दिल को सदा, तू दगा करना छोड़दे ॥ टेक ॥ दगा कहो या कपट, जाल; फरेब या तिरघट कहो। चीता, चोर, कमान-वत्, तू दगा करना छोड़दे ॥ १ ॥ चलते उठते देखते औ, बोलते हँसते दगा। तौलने औ नापने में दगा करना छोड़दे ॥ २ ॥ माता कही, बहनें कही, परनार को छलता फिरे। क्यों जाल कर जाहिल बने, तू दगा करना छोड़दे ॥ ३ ॥ मर्द का औरत बने औ, नारि का ना पुरुष हो। लख चौरासी योनि भुगते, तू दगा करना छोड़दे ॥ ४ ॥ दगा से आ पूतना ने, गोद में लिया कृष्ण को। नतीजा उसको मिला, तू दगा करना छोड़दे ॥ ५ ॥ कौरवों ने पाण्डवों से, दगा कर जूआ रमी। कौरवों की हार हुई, तू दगा करना छोड़दे ॥ ६ ॥ क़ुरान, पुरान में

है मना, * कानून में भी है सजा । महावीर का फरमान है, तू दगा करना छोड़दे ॥ ७ ॥ शिकारी कर के दगा, जीवों की हिंसा वह करे । मांजार बग की समां तू दगा करना छोड़दे ॥ ८ ॥ इज्जत में आता है फरक, एतबार कोईना गिने । मित्रता भी टूट जाती, दगा करना छोडदे ॥९॥ क्या लाया लेजायगा क्या, गौर कर इस पर जरा । चौथमल कहे नम्र हो, तू दगा करना छोड़ दे ॥१०॥

भावार्थ--ऐ भाई ! देख, यह जिन्दगानी केवल चार दिन की है, हां कहते में मिट जानेवाली है; तू दगा

---

* (अ)-भोजन में विष देनेवाले को फांसी तक की सजा । कानून धारा ३०२

(ब)--बनावटी अंगूठा या सही करनेवाले को सात साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ४४७

(स)-झूठे खत, दस्तावेज, रजिस्ट्री, आदि के लिखनेवाले को सात साल तक की सजा । कानून धारा १६५ ।

(द)-विश्वासघात करनेवाले को दस साल की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ४०६ ।

(इ) नमूने के मुआफिक माल न देने से, असली कीमत में नकली माल देनेवाले को और नकली माल का दाम असली माल के बराबर लेने से एक साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ४१५ ।

(फ) अच्छा माल बता करके बुरा माल देनेवाले को सात साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा ४२० ।

(ह) ताजा दाल, आटा, आदि में पुराना माल मिलानेवाले को छ मास की सख्त कैद की सजा और १०) रुपये तक दण्ड । कानून धारा १८८

करना छोड़दे। तू अपने दिल को सदा अच्छे विचारों से साफ रख। तू दगा करना छोड़ दे। इसे तुम दगा कहो; या कपट; या जाल या, फरेब, या तिरघट कुछ भी कहा करो। परन्तु जिस भांति चीता चोर, और, कमान अधिक नंवने पर बुरी तरह घात करते हैं इसी तरह दगाबाज पुरुष पहले तो बहुत ही अधिक नम्र बन जाते हैं, और मौका लगते ही घात कर लेते हैं ॥ १ ॥ तू चलते, उठने, देखते बोलते, हंसते, हर समय दगा करता है; तोलने और नापने तक में दगा करता है। यह ठीक नहीं। तू दगा करना छोड़ दे ॥ २ ऐ दगा बाज ! तू किसी को माता कह कर और किसी को अपनी बहनें बना कर, पर नारियों को छलता फिरता है। अरे क्यों जाल कर के मूर्ख बना जाता है ! तू दगा करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ जो पुरुष हो कर यहां दगा करता है, वह मरने के पश्चात् स्त्री की योनि पाता है; और स्त्री के दगा करने पर, वह पुरुपत्वहीन पुरुष (नामर्द पुरुष) होकर संसार में जन्म लेता है। इतनाही नहीं; वह चौरासी लाख योनियों को भोगता फिरता है। इसलिए तू दगा करना छोड़ दे ॥ ४ ॥ दगा से पूतना नामक राक्षसी ने आकर कृष्ण को गोदी में लिया, देख, उस का तत्काल ही उस को नतीजा मिल गया। इस लिए, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ५ ॥ कौरवों ने पाण्डवों से दगा

कर के जूआ खेली। पर अन्त में हुआ क्या; कौरवों ही की हार हुई ! इस लिए, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ६ ॥ कुरान शरीफ, हमारी, पुराणों और हमारे भगवान् महावीर, सभी का फर्माना है, कि तू दगा मतकर। दगा करनेवाले के लिए कानून में भी सजा लिखी है। इस लिए, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ७ ॥ देख, इसी दगा के कारण शिकारी जीवों की हिंसा कर के अपने सिर पापों की पोटली लादता है। इसलिए बिल्ली और बगुले के समान तू भी दगा करना छोड़ दे ॥ ८ ॥ इसी के कारण, इज्जत में फर्क आजाता है। कोई विश्वास भी नहीं करता; मित्रता भी टूट जाती है। इसलिए, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ९ ॥

(९)

[गजल सब्र (सन्तोष) की।]

(तर्ज -पूर्ववत्)

सब्र नर को आती नहीं, इस लोभ के परताप से। लाखों मनुज मारे गये' इस लोभ के परताप से ॥ टेक ॥ पाप का वालिद बड़ा औ, जुल्म का सरताज है। वकील दोजख का बने नर, इस लोभ के परताप से ॥ १ ॥ अगर शाहंशाह के सब, मुल्क ताबे में रहे। तो भी ख्वाहिश ना मिटे, इस लोभ के परताप से ॥ २ ॥ जाल में

पत्ती पड़े, मच्छी भी मांजा से मरे । चोर जावे जेल * में, इस लोभ के परताप से ॥ ३ ॥ ख्वाब में देखा न उस को, रोगी चाहे नीच हो । गुलामी कहो उस की करे, इस लोभ के परताप से ॥ ४ ॥ काका-भतीजा, वन्धु-वन्धु, वालिद औ वेटा सगा । वीच कोरट के लड़े, इस लोभ के परताप से ॥ ५ ॥ शम्भूम राजा चक्रवर्ती, सेठ सागर की सुनो । दरियाव में दोनों मरे, इस लोभ के परताप से ॥ ६ ॥ जहां के कुल माल का, मालिक वने तो कुछ नहीं । प्यारी को तज परदेश जावे, इस लोभ के परताप से ॥ ७ ॥ वाल वच्चे वेच दे, दुख दुर्गुणों की खान है । सम्यकत्व भी रहता नहीं, इस लोभ के परताप से ॥ ८ ॥ कहे चौथमल सद्गुरु वचन, सन्तोष इस की है दवा । दूजी नसीहत ना लगे, इस लोभ के परताप से ॥ ९ ॥

भावार्थ—यह लोभ एक ऐसी वला है, कि इस से मनुष्य को कभी भी सब्र नहीं आती । इसी लोभ के वश

* (अ)-वनावटी नोट वनानेवाले को दस साल की सख्त कैदतक की सजा । कानून धारा ४८९ ।

(व)-खोटे स्टाम्प वनानेवाले को दस साल तककी सख्त कैदकी सजा। कानून धारा २५५

(स)-जूआरी को मकान किराये से देनेवालों को २०० रुपये तक दण्ड। कानून धारा २६० ।

हो लाखों मनुष्य समय समय पर मारे गये । यह लोभ पाप का बड़ा बाप, और ज़ुल्मों में सब से बड़ा ज़ुल्म है। इसी लोभ के कारण मनुष्य नरक में वहस करनेवाला वनता है ॥ १ ॥ अगर किसी बादशाह के सारा मुल्क भी ताबे में हो; पर तब भी इस लोभ के कारण, उस की इच्छा नहीं मिटती ॥ २ ॥ यह लोभ ही है, जिस के कारण पक्षी जाल में जाकर पड़ते हैं; मछली को मांजा व्यापता है;और चोर लोग जेलों में सड़ कर नाना भांति के दुख उठाते हैं ॥ ३ ॥ इसी लोभ के कारण मनुष्य, कहो तो उस की भी गुलामी करने पर उतारू हो जाता है, जिसे उसने कभी स्वप्न में भी देखा सुना न हो । और फिर चाहे वह कभी रोगी या नीच ही क्यों न हो ॥ ४ ॥ काका को भतीजा से, भाई को भाई से और बाप को सज्जन बेटे से, कोर्टों के बीच लड़ानेवाला यही लोभ है ॥ ५ ॥ इसी लोभ के कारण, चक्रवर्ती राजा शम्भूम और सेठ सागर दोनों बेचारे समुद्र ही में अपने प्राणों को खो बैठे ॥ ६ ॥ दुनियां की सारी दौलत का भी अगर तू मालिक बन जावे, तोभी कुछ नहीं तेरे लिए वह बेकार है । क्योंकि,—

"अर्ब खर्ब लौं द्रव्य है, उदय अस्त लौं राज ।
जो 'तुलसी' निज मरन है, तो आवै केहि काज ॥"

अर्थात्—उदय से अस्त तक अथवा सारी पृथ्वी का

राज भी तुम्हारे पास हो; और अर्बों-खर्बों के द्रव्य के तुम धनी हो; तो भी तुलसीदास कहते हैं, कि यदि तुम्हारा मरण निश्चय है, तो वह सब तुम्हारे किसी भी काम का नहीं । फिर, इसी लोभ के वश, अपनी प्रेमसी प्राण-प्यारी पत्नी तक को छोड़ कर परदेश में अनेकों वार जाना पड़ता है ॥ ७ ॥ यह वह लोभ ही है जिस के कारण, मनुष्य अपने वाल बच्चों तक को बेच देता है; दुखों और दुर्गुणों की ओर मनुष्य बेवश हो कर भागता है । और उस का सम्यक् ज्ञान भी सफाचट्ट हो जाता है ॥ ८ ॥ सद्गुरु के वचन को चौथमल कहता है, कि एक मात्र संतोष या सब्र, यही इस लोभ की अचूक दवा है । इस के सिवाय, जिस को लोभ ने अपने पञ्जे में फंसा रक्खा हो,उस के उद्धार की दूसरी कोई दवा नहीं है; और न कोई नसीहत ही उस के लिए कारगर हो सकती है ॥९॥

(१०)

[राग-निषेध]

(तर्ज-पूर्ववत्)

मान मन मेरा कहा, तू राग करना छोड़ दे । आवागमन का मूल है, तू राग करना छोड़ दे ॥ टेक ॥ प्रेम प्रीति, सनेह, मोहबत, आशकी भी नाम हैं । कुछ सूझता

इस में नहीं, तू राग करना छोड़ दे ॥ १ ॥ लोह की जंजीर का, बन्धन नहीं कोई चीज है। ऐसा बन्धन प्रेम का, राग करना छोड़ दे ॥ २ ॥ सुर असुर औ नर पशु बन, राग के वश में पड़े। फिर फिर वे बे-भान होते, तू राग करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ धन, घराना, जिस्म, जोबन प्रीति निशि दिन कर रहा। ख्वाब के मांनिंद समझ के, तू राग करना छोड़ दे ॥ ४ ॥ जीते जी के नाते सब ये, प्राण-प्यारी औ अजीज। आखिर किनारा वे करें, तू राग करना छोड़ दे ॥ ५ ॥ गज, मीन, मधुकर, मृग, पतंग, इक इक इन्द्रियाधीन बन। प्राण खोते वश बन, तू राग करना छोड़ दे ॥ ६ ॥ हिरण बने हैं जड़ भरत जी, भागवत का लेख है। कोई सेठ इक कीड़ा बना, तू राग करना छोड़ दे ॥ ७ ॥ पृथ्वीराज मशगूल भी, संयोगिनी के प्रेम में। गई बादशाही हाथ से, तू राग करना छोड़ दे ॥८॥ वीर भाषे वत्स! गौतम, परमाद दिल से परिहरो। आन प्रकटे ज्ञान-केवल, तू राग करना छोड़ दे ॥९॥ गुरू-पाद के परसाद से, कहे चौथमल तज राज को। कर्म दल हट जपना, तू राग करना छोड़ दे ॥ १० ॥

भावार्थ-ऐ मन! तू मेरा कहना मान; तू राग करना छोड़ दे। इसी राग के कारण मनुष्य बार बार इस संसार में जन्मता और मरता है। प्रेम, प्रीति, स्नेह,

सोहबत, आशकी आदि आदि इस के कई नाम है । मनुष्य राग के वश हो जाता है, तब उसे कुछ नहीं सूझता इस लिए तू राग करना छोड़ दे ॥ १ ॥ मनुष्य के लिए यह राग का बन्धन एक ऐसा बन्धन है, कि लोह का बन्धन भी इस के लिए कोई चीज नहीं है। इसलिए तू राग करना छोड़ दे ॥ २ ॥ इस राग के आधीन हो जाने से देवताओं की प्रवृत्तियां भी आसुरी-राक्षसी बन जाती है; और मनुष्य पशु के समान आचरण करेनहारा बन जाता है । इतना ही नहीं; इसी राग के कारण, वे अपने वास्तविक रूप और ज्ञान को भूलकर इधर उधर मारे फिरते हैं इसलिए तू राग करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ ऐ मानवी ! तू जिस धन, घराना, शरीर और यौवन से रात-दिन राग करता है, वे हमेशा ही के रहनेवाले नहीं हैं, पानी के बुलबुले के समान है; तू इन्हें स्वप्न के मानिन्द समझ और राग करना छोड़ दे ॥ ४ ॥ ऐ मानवी ! जिसे तू प्राण-प्यारी कहकर बुलाता है और जिसे तू अपना प्यारा समझता है, वे सब के सब जीते जी तुझसे प्रेम करनेवाले हैं; अन्तिम समय में, सब के सब किनारा काटके तेरे से दूर भाग जानेवाले हैं । इसलिये तू राग करना छोड़दे ॥ ५ ॥ हाथी (लिङ्गेन्द्रिय और उस के विषय के आधीन हो) मीन-मछली (जबान और उस के विषय स्वाद के वश

हो) भौराँ (गन्धेन्द्रिय और उस के विषय सुवास के आधीन बन), मृग (कर्णेन्द्रिय और उस के विषय शब्द, वीणा की मधुर आवाज के वश बन), और पतङ्ग रूपेन्द्रिय अर्थात् आँख और उस के विषय के आधीन हो), ये पांचों प्राणी एक एक इन्द्रियों के वश बन कर, इसी मोह के कारण अपने प्राणों को गँवा बैठते हैं। इसलिये तू राग करना छोड़दे ॥ ६ ॥ महा मुनि भरतजी को इसी मोह के आधीन हो कर, जड़ मृग की योनि में जन्म धारण करना पड़ा। भागवत पुराण इस बात की साक्षी दे रही है। फिर, एक कोई दूसरा सेठ इसी के कारण कीड़ा बना। इसलिये तू राग करना छोड़दे ॥ ७ ॥ हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान इसी राग के कारण देवी संयोगिता के पीछे पड़ा। जिस से आज तक के लिए हिन्दू बादशाही का अन्त हो गया। इसलिये तू राग करना छोड़दे ॥८॥ वीर भगवान् गौतम से कहते हैं कि ऐ प्यारे, तू दिल से प्रमाद को दूर कर। जिस से केवल-ज्ञान का वहां उदय होवे। इसलिये तू राग करना छोड़दे ॥ ९ ॥ गुरु-चरणों की कृपा का भरोसा कर के चौथमल कहते हैं, कि ऐ मानवी ! यदि तुझे राज भी मिला हो, तो उस में भी तू आसक्ति या राग मत कर और केवल कर्म-संयोग का फल उसे समझ कर, विना किसी प्रकार के हर्ष-विषाद के आसक्ति रहित हो कर उस

का भोग कर । ऐसा करने से तू कर्म के फल का भागी न बनेगा । जिस से तेरा अन्तःकरण शुद्ध होगा । अन्तः करण की शुद्धि से केवल-ज्ञान तुझे मिलेगा । और अन्त में एक न एक दिन इस पथ का पथिक होने से जीवन के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष तक को प्राप्त कर सकेगा । इसलिये तू राग करना छोड़दे ॥ १० ॥

(११)

[द्वेष—निषेध]

(तर्जः-पूर्ववत्)

चाहे अगर आराम तो, तू द्वेष करना छोड़दे । कुछ फायदा इस में नहीं, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ टेर ॥ द्वेषी मनुज की देख सूरत, खून बरसे आँखसे । नसीहत असर करती नहीं, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ १ ॥ बहुत अर्सा बीत जावे, पर दिल पाक होता है नहीं । बना रहे बद ख्याल हर दम, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ २ ॥ पूछो हमें, हम है बड़े, मत बात करना गैर की । दुर्बल बने यश और का सुन, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ३ ॥ देख के जरदार को तू, या सखी धनवान को । क्यों जले ऐ बेहया, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ४ ॥ हाकमी या अफसरी, गर नौकरी किसकी लगे । सुन के बने नाराज क्यों तू, द्वेष

करना छोड़दे ॥५॥ देख गज सुख माल को, जब द्वेष सोमल ने किया। दुरगती उस की हुई, तू द्वेष करना छोड़ दे ॥ ६ ॥ पांडवाँ से कोरवों ने, कृष्ण से फिर कंस ने। बेर कर के क्या लिया, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ७ ॥ माता पिता भाई-भतीजा, दास ओ पक्षी पशू। तकलीफ क्यों देता उन्हें, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ८ ॥ गुरु पाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन ले जरा। ग्यारवाँ यह पाप है, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ९ ॥

भावार्थः—यदि इस जगत, मे सचमुच तू आराम चाहता है, तो द्वेष करना छोड़दे। देख! इस में कहीं कोई फायदा नहीं है। इसलिये, ऐसा समझ कर ही तू द्वेष करना छोड़ दे। तू द्वेष करनेवाले मनुष्य की सूरत को देख; और देख, किस तरह उसकी आँखों से खून बरसता है! कोई भी कितनाही और किसी रूप से उसे क्यों न समझाये; पर उस पर कोई नसीहत जरा भी कारण नहीं हो पाती। इसलिये तू द्वेष करना छोड़दे ॥ १ ॥ द्वेषी आदमी का दिल कभी साफ नहीं होता, चाहे कितनाही समय क्यों न बीत जावे। द्वेषी और जिसके साथ द्वेष किया जाता है, दोनों के दिल में हर समय एक दूसरे के प्रति बुरा ख्याल बना रहता है। तभी तो भगवान् बुद्ध का कथन था, कि "द्वेषानल द्वेष के ईंधनको पाकर उसी प्रकार प्रज्वलित हो

उठती है, जिस प्रकार घी की आहुति को पाकर धधकती हुई अग्नि और भी अधिक जोरों से भड़क उठती है। किन्तु कितनी ही भयङ्कर द्वेषाग्नि क्यों न हो; वह सत्प्रेम के सद्वारि द्वारा, विना किसी प्रयास के, अति शीघ्रही बुझाई जा सकती है। इसलिये तू द्वेष करना छोड़दे ॥ २ ॥ ऐ मानवी ! तू द्वेप के वश हो, बड़बड़ाने लगता है और कहता है, कि हम बड़े हैं ; हमे औरों की बात क्यों पूछते हो; आदि। यों तू द्वेपी बन कर और दूसरों का यश सुन कर क्यों दुर्बल बना जाता है ॥३॥ ऐ बेहया ! ऐ बेशर्म ! तू किसी धनवान को व किसी दातार को देख कर, दिल ही दिल में डाह क्यों करता है ! क्योंकि, इस से उसका तो कोई नुक्शान होता नहीं है ; उल्टा, तू ही अन्दर ही अन्दर जलता भुनता है। इसलिये तू द्वेप करना छोड़दे ॥ ४ ॥ अगर किसी को हाकमी मिले या ऑफि-सरी ; या किसी की नौकरी लगे; तो तू यों दूसरों की बढती देख कर क्यों द्वेष करता है ॥ ५ ॥ देख, जब सो-मलने दूसरों के हाथी–घोडों और सम्पत्ति तथा सुख को देख कर द्वेष किया, तो उसकी दुर्गति हुई। इसलिये तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ६ ॥ फिर देख, पांडवो से कौरवों ने द्वेष किया; और कृष्ण से कंसने। पर नतीजा दोनों का क्या हुआ ! दोनों ओर द्वेष करनेवाले ही का सत्यानाश

मिला ! इसलिये तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ७ ॥ ऐ संसारी ! तू अपने माता-पिता, भाई-भतीजे, दास-दासी और पक्षी तथा पशुओं को क्यों तकलीफ देता है ! तू इन से तो द्वेष करना छोड़दे ॥ ८ ॥ गुरु-चरणों का भरोसा कर के चौथमल तुझे कहते हैं; तू जरा उन का कहना भी सुन ! यह द्वेष ग्यारवां पाप है । तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ९ ॥
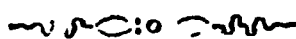
(१२)

[कलह—निषेध]

(तर्जः--पूर्ववत्)

आकिबत से डर जरा तू, कलह करना छोड़दे । भगवान का फरमान है, तू कलह करना छोड़दे ॥ टेर ॥ जहां लडाई वहां खुदाई, हो जुदाई ईश से । इत्तफाक गौहर क्यों तजे , तू कलह करना छोड़दे ॥ १ ॥ ना बटे लड्डू लड़ाई,-बीच कहनी जगत में । बेजा कहे बेजा सुने, तू कलह करना छोड़दे ॥ २ ॥ पूजा करे ले जूतियां से, बलके ले हथियार को । सजा*-याफता भी बने, तू कलह करना छोड़दे ॥ ३ ॥ सेन्ट्रल जेल का भी तू, कभी मिहमान बनता है । ऐब सब जाहिर करे, तू कलह करना छोड़दे ॥ ४ ॥ रावण

* किसी पर हमला करनेवाले तथा इज्ञा करनेवाले को एक साल तक की सख्त क़ैद की सजा । कानून धारा ३२३ ।

विभीषण से लडा, पहुँचा विभीषण राम पां। देखो नतीजा क्या हुआ, तू कलह करना छोडदे ॥ ५ ॥ हार हाथी के लिए, कोणक चेडा से भिड़ा। हाथ कुछ आया नहीं, तू कलह करना छोडदे ॥ ६ ॥ कैकई ने बीज बोया, फूट का निज हाथ से। भरत जी नाखुश हुए, तू कलह करना छोड़ दे ॥ ७ ॥ हसन और हुसेन से बेजा किया याजीद ने। हक में उस के क्या हुआ तू कलह करना छोड़दे ॥८॥ गुरु पाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन ले जरा। पाप बारहवां है कलह, तू कलह करना छोड़ दे ॥ ९ ॥

भावार्थ– ऐ मानवी! तू कलह करना छोड़ कर जरा उस दिन का भी डर दिल में रख, जिस दिन तुझे अपनी करनी का फल भोगना होगा। भगवान महावीर का भी फर्मान है, कि तू कलह करना कतई छोड़ दे॥ जहां लड़ाई भिडाई होती है, वहां कुदरती रुप से भगवान से जुदाई हो जाती है। क्योंकि, " जहां कुमति तहँ विपति निदाना और "फूट ऊपजे जौन कुल, सो कुल बेग नशाय। युग बांसन की रगड़ से, सिगरो बन जल जाय ॥ " अर्थात् फूट पैदा होती है, उस कुल का शीघ्र ही नाश हो जाता है। जैसे, वन में दो बांसों की रगड़ से सारा वन शीघ्र ही भस्मीभूत हो जाता है, जल बल कर खाक हो जाता है। ऐ भाई! इत्तिफाक से, दैवयोग से, यह जीवन रुपी

मोती तुझे मिला है; इस का यों क्यों तू कलह कर कर के कतर ब्यौंत करता है ! तू कलह छोड़ दे ॥ १ ॥ जगत में यह कहानी प्रसिद्ध है, कि " लडाई के बीच, लड्डू कहीं नहीं बटते; " सो बिलकुल ठीक ही घटती है। क्योंकि, जो बेजा (अश्लील) कहता है, वही बेजा सुनता भी है फिर किसी महात्माने क्या ही ठीक कहा है, कि–

" यह जगत एक निर्मल कांच के समान है इस में हम जिन जिन भावों के द्वारा जैसी जैसी आकृति जगत की देखते हैं; उस में ठीक वैसी वैसी आकृति हमें जगत की दिख पड़ती है। या यूं कहो कि इस जगत में हमारे, प्रत्येक भावों की प्रतिध्वनि होती है । जैसा हम कहेंगे, जैसे हमारे भले या बुरे शब्द होंगे, ठीक वैसे ही शब्द होंगे, ठीक वैसे ही शब्द बदले में जगत रुपी पर्वत से टकरा कर मिलेंगे। इसलिए तू कलह करना छोड़दे॥ २॥ यदि तुझे अपने बल का घमण्ड है, और उस बल, तू कलह के आधीन बन, किसी पर जूतियों की बौछार कर देता है, तो तू सजायाफ्ता भी बनजाता है। इसलिए तू कलह करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ ऐ मनुष्य ! इसी कलह की कृपा ही के कारण, कभी तू सेन्ट्रल (केन्द्रीय) जेल का भी पाहुना बनता है। और भी जितने प्रकार के दोष तेरे अन्दर होते हैं, वे सब के सब इसी कलह के कारण

जन जाहिर होजाते हैं। इसलिये तू कलह करना छोड़दे ॥ ४ ॥ देख, इसी कलह ने, इसी फूट-फत्तीजे ने रावण को विभीषण से लड़ाया; और फिर विभीषण को राम के पास पहुँचाया। फिर, इस का नतीजा भी जो कुछ हुआ; उस को भी सारा संसार जानता ही है। इस लिये तू कलह करना छोड़दे ॥ ५ ॥ हाथी के लिए हार कर कौणक चेड़ा से जा भिडा। परन्तु कलह के वश उसके हाथ भी कुछ न आया। इसलिये तू कलह करना छोड़दे ॥ ६ ॥ कैकयी ने अपने हाथ से फूट का बीज बोया। जिस का परिणाम यह हुआ, कि स्वयं भरतजी, जो उसी के पुत्र थे, वे भी उस से नाखुश हुए; और वह भी स्वयं विधवा बन गई इसलिये तू कलह करना छोड़दे ॥ ७ ॥ हसन और हुसेन से याजीदखां ने वैर विरोध ठाना; परन्तु अन्त में याजीदखां ही का बुरा हुआ। इसलिये तू कलह करना छोड़दे ॥ ८ ॥ चौथमल कहते हैं, कि यह कलह बारवां पाप है। इसलिये तू कलह करना छोड़दे ॥ ९ ॥

(१३)

[कलङ्क—निषेध]

(तर्जः--पूर्ववत्

इस तरफ तू कर निगाह, तू तोहमत लगाना छोड़दे।

तुफेल है यह तेखां, तू तोहमत लगाना छोड़दे ॥टेक॥ अफ-सोस है इस बात का, ना सुनी देखी कभी। फौरन कहे तेने किया, तू फेल करना छोड़दे ॥ १ ॥ तङ्ग हालत देख किस की, तू बताता चोर है। बाज आ इस जुल्म से, तू फेल करना छोड़दे ॥ २ ॥ मर्द औरत युवान देखी, तू बताता बद–चलन। बुढ़िया को कहे यह डाकण है, तू तोहमत लगाना छोड़दे ॥ ३ ॥ सच्चे को झूठा है कहे तू, ब्रह्मचारी को लम्पटी। कानून * में इस की सजा है,तू तोहमत लगाना छोड़ दे ॥४॥ अपने पर खुद जुल्म दुनियां, देखलो यह कर रही। मालिक की मरजी है कही, तू तौहमत लगाना छोड़ दे ॥ ५ ॥ गीता, पुरान, कुराण, इंजील, देखले सब में मना इसलिऐ तू बाज आ, तू तोहमत लगाना छोड़ दे ॥ ६ ॥ गुरुपाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन ले जरा। मान ले मेरी नसीहत, तू तोहमत लगाना छोड़दे दे ॥ ७ ॥

भावार्थ–ऐ मानवी ! किसी पर इल्जाम लगाना,यह बुरा है। तू इस को जरा विचार कर, और तू किसी पर इल्जाम लगाना छोड़ दें। अफसोस तो इस बात का है, कि जिस

*(अ) व्याभिचार का आरोप रखनेवाले को सात साल तक की सख़्त कैद की सजा। कानून धारा ५०६।

(ब) झूठा कलङ्क लगाने वाले को छ मास तक की सादी सजा और १०००) तक का जुर्माना। कानून धारा १८१।

को कभी देखा या सुना तक नहीं उसके लिये तू फौरन कह उठता है, कि मैंने किया है । इस प्रकार तू फेल फितुर करना छोड़ दे ॥ १ ॥ किसी बेचारे की तङ्ग हालत देख कर तू उसे चोर बताता है । अरे ! इस जुल्म से तू जरा तो बाज आ, तू फेल फितुर करना छोड़दे ॥ २ ॥ किसी युवक और युवती को एक साथ देख कर ही, तू उन्हें बद चलन, चरित्र हीन कह उठता है । फिर किसी बुढ़िया औरत को देख कर तू उसे डाकिन कहता रहता है । ये व्यर्थ के, किसी के कलङ्क लगाना तू छोड़ दे ॥ ३ ॥ एक ओर तू सच्चे को झूठा करता है, तो दूसरी ओर ब्रह्मचारी को व्यभिचारी बनने का इल्जाम लगाता है । परन्तु देख, कानून में इस के लिये सजा है । इसलिए तू किस को झूठा कलङ्क लगाना छोड़ दे ॥ ४ ॥ देखो, लोग एक दूसरे को यों झूठा लाञ्छन लगा लगा कर भगवान की इच्छा के विपरीत खुद अपने ही ऊपर जुल्म कर रहे हैं । इसलिए तू इल्जाम लगाना छोड़ दे ॥ ५ ॥ ऐ मानवी ! देख गीता, पुराण कुरान और बाइबिल सभी के धर्म-ग्रन्थों में तोहमत लगाना मना है इसलिए तू इस बद चाल से बाज आ ॥ ६ ॥ गुरु चरणों की कृपा से चौथमल कहतें हैं, कि मेरी नसीहत जरा सुनलो; किसी के सिर तोहमत लगाना छोड़ दो ॥ ७ ॥

(१४)

[चुग़ली-निषेध]

(तर्ज़ पूर्ववत्)

हर दिन हम कहते तुझे तू, चुगली का खाना छोड़ दे। चौदवां यह पाप है तू, चुगली का खाना छोड़ दे ॥ टेक ॥ चुगलखोर ख़िताब तुझको, नशीब भी होगा सही। वद समझ कर बाज़ आ तू, चुगली का खाना छोड़ दे ॥ १ ॥ इसकी उसके सामने, औ उसकी इसके सामने। क्यों भिड़ाता है किसे तू, चुगली का खाना छोड़ दे ॥२॥ जिस की चुगली खाता है, इनसान गर वह जान ले। बन जाय जानी शत्रु तेरा, चुगली का खाना छोड़ दे ॥ ३ ॥ इसके जरिये हो लड़ाई, क़ैद में भी जा फँसे। जहर खा मर मिटे, तू, चुगली का खाना छोड़ दे ॥ ४ ॥ सौका भिडाई राम ने, बनवास सीता को दिया। आखिर सत प्रगट हुआ, तू चुगली का खाना छोड़ दे ॥ ५ ॥ गुरु पाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन ले जरा। आकिबत का खौफ ला तू, चुगली का खाना छोड़ दे ॥ ६ ॥

भावार्थ—भाई! हम तुझे हर दिन समझाते हैं कि तू चुगली का खाना छोड़ दे। चुगली खाना यह चौदवां पाप है, तू इसे छोड़ दे। इसी के कारण से तुझे चुगलखोर की पदवी भी मिलती है। जिसे तू बुरा समझ कर तू

चुगली का खाना छोड़ दे ॥ १ ॥ तू इसकी उसके सामने और उसकी इसके सामने क्यों भिड़ाता है; यह बहुत ही बुरा है। तू चुगली का खाना छोड़ दे ॥ २ ॥ ऐ भाई! जिस पुरुष की तू चुगली खाता है अगर वह इस बात को जान ले तो वह तेरा जानी का दुश्मन बन जायगा। इस-लिए भी तू चुगली खाना छोड़ दे ॥ ३ ॥ इस के जरिये लड़ाई भिड़ाई हो बैठती है; और मनुष्य कभी कैद में भी जा फँसता है तथा, इसी चुगलखोरी के कारण से कई लोग जहर खा कर इस संसार से असमय में ही चल बसे। इसलिए तू चुगली का खाना छोड़ दे ॥४॥ लोंगो ने सीता के विषय में राम के पास चुगली खाई; और उन्हों ने उस पर से सीता को वनवास दे दिया। आखिर में जब सत्य प्रगट हुआ और सीता अपने सत्य की कसौटी पर खरी उतरी, तब तो राम को बड़ाही पश्चाताप हुआ। इसलिए तू चुगली खाना छोड़ दे ॥५॥ चौथमल तुझे कहते हैं, कि भाइ! जरा अपनी करणी के भोग के दिन का भी तो खौफ कुछ अपने दिल में खा! और चुग़ली के खाने का अभ्यास छोड़दे ॥ ६ ॥
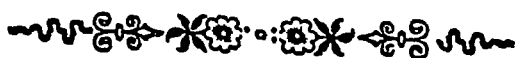
(१५)

[निन्दा-निषेध]

(तर्ज-पूर्ववत्)

आबरू बढ़ जायगी, निन्दा पराई छोड़दे। सन्त वाणी मान कर, निन्दा पराई छोड़दे ॥ टेर ॥ तेरे सर पर क्यों धरे तू, खाक ले कर और की। दानी-समंद होवे अगर तू, निन्दा पराई छोड़दे ॥ १ ॥ गुलाब के गर शूल हो, माली को मतलब फूल से। धारले गुण इस तरह तू, निन्दा पराई छोड़दे ॥ २ ॥ खुबसूरती कौवा न देखें, चींटी न देखे महल को। जोंख के सम मत बने तू, निन्दा पराई छोड़दे ॥३॥ पीठी * मेल इस को कहा, भगवान श्री महावीर ने। मिसाल शूकर की समझ, निन्दा पराई छोड़दे ॥ ४ ॥ गिब्बत करे नर गैर की जो, वह भाई का खाता गोश्त। कुरान में है यह लिखा, निन्दा पराई छोड़दे ॥ ५ ॥ सुन ली हो, चाहे देख ली हो, गर पूछ ली कोई शक्स से। झूठ

* (अ)-निन्दा करना धर्म-शास्त्रों से निषेध है:-

(ब)-ताजीरात-हिन्द में भी निन्दा का निम्न लिखित रूप से निषेध कियागया है।

(१)-बीभत्स पुस्तक बेचनेवाले को तीन मास तक की सख़्त कैद की सजा। कानून धारा १६२

और (२)-किसी की निन्दा करनेवाले, लेख छपानेवाले, व झूठा कलङ्क देने वाले को दो साल तक की सख़्त कैद का सजा। कानून धारा ४६२।

ही हो, सत्य चाहे, निन्दा पराई छोड़दे ॥ ६ ॥ गुरु-पाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन ले जग । है चार दिन की जिन्दगी, निन्दा पराई छोड़दे ॥ ७ ॥

भावार्थ—सन्त महात्माओं की वाणी को मान कर तू पराई निन्दा करना छोड़दे । इसके छोड़ देने से तेरी आबरू बढ़ जायगी । अरे भाई ! तू इस पराई निन्दा के द्वारा, क्यों पराये पापों की पोटली को अपने सिर पर लादना चाहता है ! अगर तू सचमुच में उत्तम विचारवाला पुरुष है; अगर तू सचमुच में दानियों में सरताज है, तो पराई निन्दा करना छोड़दे ॥ १ ॥ गुलाब के अन्दर अगर कॉटे लगे हों, तो उन से माली को क्या मतलब ? जिस प्रकार वह तो केवल फूलों ही से वास्ता रखता है; ठीक उसी प्रकार तू भी किसी से केवल गुण को ग्रहण कर लिया कर और पराई निन्दा को छोड़दे ॥ २ ॥ फिर यह सारा विश्व ही तो गुण–दोष युक्त है । यहां का जो पदार्थ जितना गुण कारक और हितकर है, वह ज्ञान की दृष्टि और व्यवहार की दृष्टि दोनों से, उतना ही अधिक दूषित और नाशकारक भी तो है । जैसे कहा भी है—

जड़ चेतन गुण दोष मय; विश्व कीन्ह करतार ।
सन्त हंस गुण गहहिं पय; परिहरि वारि विकार ॥

अस्तु । यदि तू इस संसार महा सागर से आसानी

के साथ पार पाना चाहता है, तो हंस के समान केवल गुण रूपी दूध का पान किया कर; और विकार रूपी पानी का त्याग कर किया कर। और यह त्याग तभी हो सकता है, जब कि तू पराई निन्दा करना छोड़दे। कौवा जिस प्रकार कोई खूबसूरती नहीं देखता; भली बुरी किसी भी वस्तु के ऊपर चोंच चला बैठता है, त्योंही चींटी भी किसी महल को नहीं देखती; और जोंख भी जिस किसी जगह चिपके, केवल खून ही के पीने की इच्छा करती है; इसी तरह यदि तू भी इन प्राणियों के समान केवल अवगुण ही का गाहक बनेगा, तो फिर तुझ में और इन में अन्तर ही कौनसा रह जावेगा। और यह अवगुण ग्रहण की चाल तुझ में केवल पराई निन्दा ही से आती है। इसलिये तू इस पर निन्दा का त्याग कर ॥ ३ ॥ भगवान् श्री महावीर ने इस पर निन्दा को 'मैला' कहा है। और जो पर निन्दक पुरुष है, वह शूकर (सूअर) के मानिन्द है। इसलिये तू पर-निन्दा को छोड़ ॥ ४ ॥ कुरान शरीफ में भी यह बात प्रत्यक्ष रूप से दर्शाई गई है कि जो लोग दूसरे की निन्दा करते हैं, वे अपने ही भाई का गोश्त खाने के पाप के भागीदार होते हैं। इसलिये तू पराई निन्दा करना छोड़दे ॥ ५ ॥ पर-निन्दा, चाहे वह सुनी हुई हो, या देखी हुई हो, या दूसरे शख्स से सुनी हुई ही

क्यों न हो, या फिर वह झूठी हो या सच । अन्त में है तो वह निन्दा ही । इसलिए तू उस का त्याग कर ॥ ६ ॥ चौथमल तुझे समझा कर कहते हैं, कि अरे भाई ! इस क्षण-भङ्गुर, चार दिन की अस्थायी जिन्दगी के लिए क्यों तू पराई निन्दा करता है । तू उसका त्याग कर ॥ ७ ॥

(१६)

(कुभावना-निषेध)

(तर्जः—पूर्ववत्)

वीर ने फरमा दिया है, पाप यह है सोलवां । अ-ख्त्यार*हरगिज मत करो,तुम पाप यह है सोलवां ॥ टेक॥ सत्सङ्ग तो खारी लगे, कुत्सङ्ग में रहे रात-दिन । जूआँ-बाजी बीच राजी, पाप यह है सोलवां ॥ १ ॥ दया-दान अरु सत्य, शील की, गर सीख जो तुझ को करें । बिल कुल पसँद आती नहीं है, पाप यह है सोलवां ॥ २ ॥

*ताजीरान-हिन्द में कुभावनावान् पुरुष के लिय नीचे के दण्ड निर्धारित हैं.

(अ)-प्रतिज्ञा-पूर्वक खोटो बात करनेवाले को तीन साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा १८१

(ब)-धर्मस्थान में वीभत्स कार्य करने वाले को दो साल तक की सख्त कैद की सजा । कानून धारा २६५

और (स)-आम रास्ते पर जूआ खेलने वाले को २००) रुपये तक दण्ड की सजा । कानून धारा २६० ।

गांजा, चड़स, चण्डू, तमाखू, बीड़ी, सिगरेट, भङ्ग, को। पी पी मगन रहे सदा तू, पाप यह है सोलवां ॥ ३ ॥ ज्ञान-ध्यान-ईश्वर-भजन में, नाराज तू रहता सदा। गोठ, नाटक में मगन है, पाप यह है सोलवां ॥ ४ ॥ ऐश में मानी रती तू, अरत वेदी धर्म में। कुण्डरीक ने जन्म खोया, पाप यह है सोलवां ॥ ५ ॥ अरजुन मालाकार ने, महावीर की वाणी सुनी। चारित्र ले त्यागन किया, पाप यह सोलवां ॥ ६ ॥ गुरु पाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन ले जरा। चाहे भला तो मेट जल्दी, पाप यह है सोल-वां ॥ ७ ॥

भावार्थ—वीर भगवान् की आज्ञा है, कि यह कु-भावना सोलहवें पाप में शुमार है। इसलिये तू कभी भी किसी भी हालत में इस के आधीन मत बन। इसी कुभा-वना के कारण मनुष्य को सत्सङ्गति बुरी लगती है; वह बुरी सङ्गति में दिनरात रत रहता है; और जूआँखोरी उसे दिल से प्यारी लगती है ॥ १ ॥ मनुष्य को यदि दया, दान, सत्य और सदाचारकी कोई शिक्षा देनें लगे, तो इसी कुभावना के कारण, वह उसे तनिक भी पसन्द नहीं पड़ती ठीक तो है "दैवोऽपि दुर्बल घातकः"। अर्थात् जो एक बार पतन की ओर मुंह कर चुका है उसे भला बचा ही कौन सकता है! ऐसे पुरुष के लिये तो भाग्य भी तो उलटा नाशक ही होता है ॥ २ ॥ इसी कुभावना के कार

ण, ऐ संसारी तू सदा गांजा, भांग चडस, चएडू तमाखू बीड़ी, सिगरेट आदि ही के रंग में मस्त रहता है । और तुझे हरि-भजन या सत्सङ्गति प्यारी नहीं लगती ॥ ३ ॥ मनुष्य इसी कुभावना नामक पाप में फँसा रहने के कारण सैर सपाटे, वन भोजन, और नाटक आदि में तो सदा प्रसन्न चित्त और नाचते कूदते नजर आते हैं; परन्तु इन के विपरीत उसे ज्ञान, ध्यान ईश्वर भजन आदि की चर्चा तनिक भी प्यारी नहीं लगती । इन कामों की ओर उन का चित्त सदा अनमना सा देखा सुना जाता है ॥ ४ ॥ देख ! इसी कुभावना के कुसङ्ग में रह कर, कुण्डरीक ने सारा जन्म ही ऐशोआराम और मान में बिता दिया: और इस के विपरीत वह आजीवन धर्म कर्म में अकर्मण्य सा बना रहा ॥ ५ ॥ अर्जुन मालाकार ने श्री वीर भगवान की वाणी सुनी; और उस से इस कुभावना का त्याग कर, वह चारित्र्य पद को प्राप्त हुआ ॥६॥ चौथमल तुझे कहते हैं, कि ऐ भाई ! यदि तू अपना भला चाहता है, तो इस कुभावना को शीघ्र ही हटा ॥ ७ ॥

(१७)

[कपट- निषेध ।]

(तर्ज-पूर्ववत्)

फायदा इस में नहीं, क्यों झूठ बोले जाल से ।
इस का नतीजा है बुरा, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ टेक ॥

दगाबाजी द्रोग मिलकर, पाप सत्रहवां बना।
जाइज नहीं है ऐ सनम, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ १ ॥
अच्छी बुरी दोंनो मिला, अच्छी बता कर बेच दे।
इसी तरह तू वस्त्र दे, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ २ ॥
भेद लेने गेर का तू, बातें बनावे प्रेम से।
अनजान हो कहे, जानता, क्यों झूठ बोले जाल से ॥३॥
भेष जबां दोनों को बदले, चाल भी देवे बदल।
रुप को भी फेर देवे, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ ४ ॥
परदेशी नृप को राणी ने, भोजन दिया था विष मिला।
बोल कर मीठी जबां, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ ५ ॥
गुरु पाद के परसाद से, कहे चौथमल सुन ले जरा।
सरलता से सत्य कह, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ ६ ॥

भावार्थ— ऐ भाई ! तू जाल से क्यों झूठ बोलता है ! इस में कोई फायदा नहीं है। इस का नतीजा बुरा है। इसलिय तू जाल से झूठ मत बोल। यह सत्रहवां पाप, जो कपट कहलाता है, दगाबाजी और झूठ से मिलकर बना है। ऐ प्यारे ! यह जाल कर के झूठ बोलना लाजिम नहीं है। इसलिए तू इस को छोड़ दे ॥ १ ॥ तू नमूने तो अच्छी चीजों के बताता है; और देता है अच्छी और बुरी दोनों को मिला कर। इसी प्रकार कपड़े में भी मेल मिलावट तू करता रहता है यों जाल से झूठ क्यों

बोलता है ॥ २ ॥ तू किसी का भेद लेने के लिये, उस से प्रेम पूर्वक बातें करता है और किसी बात को न जानता हुआ भी तू कह बैठता है, कि मैं उसे जानता हूं । यों झूठ, तू जालसाजी से क्यों बोलता है ॥ ३ ॥ तू योंहीं जालसाजी से झूठ सच कर के, कभी तो अपने रुप को बदल देता है कभी जबान को पलट देता है; कभी चाल ही दूसरी चलने लग जाता है; और कभी अपनी वेष भूषा और शानशक्ल ही कतर ब्योंत करने में चातुरी दिखाता है ॥ ४ ॥ परदेशी राजा को रानी ने मीठा बोल बोल कर विष सना भोजन दे दिया था । यों जाल क्यों झूठ का ताना बाना तू रचता है ॥ ५ ॥ चौथमल तुझे बार बार कहते हैं, कि तू सरलता पूर्वक सत्य बोला कर और यों जालसाजी से झूठ मत बोला कर ॥ ६ ॥

(१८)-(अ)

[मिथ्यात्व-निषेध ।]

(तर्ज-पूर्ववत्)

सर्व पापों बीच में, मिथ्यात्व ही सरदार है ।
इस के तजे बिन आवागमन से, होते नहीं नर पार हैं । टेक ।
सत्य दयामय धरम को, अधरम पापी मानते ।
अधरम को माने धरम, शठ डूबते मझ धार हैं ॥ १ ॥
जीव को जड मानते, असत युक्ती ठान के ।

निरजीव में सरजीव की, श्रद्धा रखें हरवार हैं ॥ २ ॥
सम्यग् दर्शन ज्ञान ध्यान की कहें, ये उन्मार्ग हैं।
दुर्व्यसनादिक उन्मार्ग को, बतलाते मुक्ति द्वार हैं ॥ ३ ॥
सुसाधु को ढोंगी समझ तू, करता कदर उन की नहीं।
धन मान गुरु रक्खे त्रिया उनके नमे चरणार है ॥ ४ ॥
नाश कर के कर्म को, गये; मोक्ष, सो माने नहीं।
मानता मुक्ति उन्होंकी, कर्म जिन के लार है ॥ ५ ॥
अब तो मिथ्यामत को प्राणी, त्यागना ही सार है।
समकित रतन को धार फिर तो, छिन में बेड़ा पार है॥६॥
साल चौरासी बीच जब, नागौर में आना हुआ।
गुरुपाद के परसाद से, कहे चौथमल हितकार है ॥ ७ ॥

भावार्थ—झूठ बोलना यह सब पापों में सब से बड़ा पाप है। मनुष्य जब तक झूठ को नहीं छोड़ता, तब तक वह चक्फेरी के चक्कर से कभी नहीं निकल पाता। पापी लोगों का यह स्वभाव ही होता है, कि वे सत्य और दया धर्म को तो अधर्म मानते हैं, और अधर्म को अन्ध विश्वास और अज्ञान के कारण धर्म समझते हैं। इस से वे धूर्त लोग मंझ धार में जा डूबते हैं ॥१॥ वे ही अन्ध विश्वासी पापी जीव तरह तरह की झूठी झूठी युक्तियों और तर्क वितर्कों के द्वारा चेतन आत्मा को निर्जीव या जड़ मानते रहते हैं, और जो नाशवान् तथा जड़ पदार्थ हैं,

उन्हे सजीव मानकर, उन में नित्य और अविनाशी पदार्थों की भांति श्रद्धा रखते हैं ॥ २ ॥ वे ही चित्त, और चरित्र से हीन पुरुष मनुष्य जीवन के एक मात्र सच्चे सम्बल, सम्यक् दर्शन सम्यक् ज्ञान और सम्यक् ध्यान को तो कुपन्थ बतलाते हैं, और दुर्व्यसनादिक जितने भी सत्यानाशक पथ हैं, उन्हें मुक्ति का साधन कहते हैं ॥ ३ ॥ ऐसे ही अज्ञानी और अधर्म पथ के पान्थी लोग, सच्चे साधुओं को तो ढोंगी बता कर उन की बेइज्जती करते रहते हैं; और जो नामधारी साधु पुरुष हैं, जो गुरु-पाट को कलङ्कित करनेवाले हैं, जो पूरे पूरे अक्षर-शत्रु होते हैं; और जो दिन-रात धन, मान और नेत्र बाणों से बिद्ध करनेवाली कानवती कामिनियों के रंग में रत रहते हैं; उन्हें अपने गुरु मान कर, उन के चरणों को नमन किया करते हैं ॥ ॥ ४ ॥ पाप-पङ्क में फंसे हुए ये पुरुष, उन लोगों को तो, जो कर्म-बन्धन को क्षय कर के मोक्ष को प्राप्त हुए, मानते नहीं हैं; किन्तु जो नारकीय कीड़े के समान रात—दिन कर्म में रत हैं, उन को मुक्ति का अधिकारी और पथी समझते हैं ॥ ५ ॥ ऐ संसारियो! इस प्रकार के मिथ्यामतों को छोड़ना ही मनुष्य जीवन का सदुद्देश्य है। यदि मनुष्य समकित--रत्न को धारण कर ले, तो क्षण--भर में इस दुख-सागर—संसार से उस

का बेड़ा पार लग जाता है॥ ६ ॥ संवत् १९८४ विक्रमीय में जब मुनिराज का नागोर में पदार्पण हुआ, तब आपने मिथ्यात्व पर व्याख्यान अपने श्रीमुख से देते हुए, ये हितकारी वचन लोगों से कहे थे॥ ७॥

(१८)—(ब)—

(तर्जः-पूर्ववत्.)

कहां लिखा तू दे बता, जालिम सजा नहीं पायगा। याद रख तू आकिबत की, हाथ मल पछतायगा॥ टेक॥ आप तो गुमराह है ही, फिर और को गुमराह क्यों? ऐसे अजाबों से वहां पर, मुंह सिया हो जायगा॥ १॥ बन बेखतर तकलीफ देता, है किसी है किसी मिसकीन को। बम्बूल का तू बीज बो कर, आम कैसे खायगा॥२॥ रूह होगी कब्ज तेरी, जा पड़ेगा घोर में। बोल बन्दा है तू किस का, क्या नहीं बतलायगा॥ ३॥ वां हूकूमत ना चलेगी, ना चलेगी हुज्जतें। ना इजार वां किसी का, रियाहि कैसे पायगा॥४॥ जवानी जमा औ खर्च से काम वां चलता नहीं बन्दे। कहे चौथमल कर भलाई, तो बरी होजायगा॥ ५॥

भावर्थ—जालिम! बता तो सही, यह कहां लिखा है, कि तू अपने किये का फल नहीं पावेगा! अरे! तू अपनी करणी के भोग की घड़ी को याद रख! नहीं तो

सिर फोड़ फोड़ कर तू पछतावेगा। तू खुद तो भूला हुआ है ही; फिर दूसरों को क्यों अपने साथ ले कर डुबोता है! अरे! ऐसे कामों से वहां तेरा मुँह काला किया जायगा! तुझे अपनी करणी का भोग बुरी तरह भोगना पड़ेगा ॥ १ ॥ तू ऐसा निधड़क हो कर के, किसी गरीब को तकलीफ देता है मानो तेरे इन जुल्मी कामों को कोई देखनेवाला है ही नहीं! अरे! इस प्रकार बधान्ती कर के भी कभी किसने कोई सुख भोग पाया है? कदापि नहीं। जैसे, कोई बम्बूल का बिरवा रोप कर, आम कभी नहीं खा सकता ॥ २ ॥ ऐ जालिम! इन अत्यचारों के कारण से तेरी आत्मा जब एक दिन निकल जायेगी, तब तू घोरातिघोर नरक में जा पड़ेगा। ऐ बन्दे! उस समय जब तेरे से तेरी करणी का हिसाब पूछा जायगा, क्या तू नहीं बतलावेगा? ॥ ३ ॥ ऐ भाई! न तो वहां किसी की हुकुमत ही चलेगी; और न दलीलें ही। तथा न वहां किसी का कोई इजारा ही है इसलिये तू वहां रिहाई या छुटकारा कैसे पावेगा ॥ ४ ॥ ऐ बन्दे! वहां जबानी जमा-खर्च से कभी कोई काम नहीं चलता। चौथमल कहते हैं, कि अगर तू यहां भलाई करेगा तो वहां बरी हो जायगा। अर्थात् अन्तिम समय में आवागमन से छुटकारा पाने का एक मात्र उपाय, भलाई करना ही है ।५।

उद्बोधन

(तर्जः-मेरे स्वामी बुलालो मुगत में मुझे)

कभी नेकी से दिल को हटाओ मती। बुरे कामों में जी को लगाओ मती ॥ टेक ॥ आये हो दुनियां बीच में, मत ऐश अन्दर रीजियो। आराम पाओ वहां सदा तुम, तदबीर ऐसी कीजियो। ऐसी वख्त अमोल गमाओ मती ॥ कभी० ॥ १ ॥ दिन चार का महमान याँ तू, इस का भी तुझको ध्यान है। दर्द दिल ये वासते, पैदा हुआ इनसान है। सख्त बन के किसी को सताओ मती ॥ कभी ॥ ॥ २ ॥ नशाखोरी, जिनाकारी, गुस्साबाजी छोड़दो। हर एक से मोहब्बत करो तुम, फूट से मुँह मोड़दो। जाहिल लोगों के झाँसे में आओ मती ॥ कभी० ॥ ३ ॥ कौन तेरे मादर फादर, कौन तेरे सजन हैं। धन-माल यहीं रह जायगा, तेरे लिए तो कफन है। ऐसा जान के पाप कमाओ मती ॥ कभी० ॥ ४ ॥ साल छियासी भुसावल, आया जो सेखेकार में। चौथमल उपदेश श्रोता-को दिया बाजार में। जाके होटलों में धर्म गमाओ मती ॥ कभी० ॥ ५ ॥

भावार्थ—नेकी से दिलको कभी मत हटाया करो; और बुरे कामों में दिल को कभी मत लगाओ। तुम दुंनियां में इसलिए नहीं आयेहो, कि तुम यहां कौओं-कुत्तों की तरह विषय-भोगो में फँसे रहो। किन्तु तुम यहां इस-

लिये आये हो, यहां तुम उन उन तदवीरों को करने के लिये आये हो, जिस से तुम्हे परलोक में सुख की प्राप्ति हो। इसलिये ऐसे अनमोल और देव-दुर्लभ जीवन के एक एक पल-मात्र तक को कभी व्यर्थ मत गगाओ, और बुरे कामों से दिल को दूर रखते हुए, हर घड़ी नेकी में लगे रहो ॥ १ ॥ ऐ वन्दे! तू यहां केवल चार दिन अर्थात् क्षणिक जीवन के लिये कौल करार कर के आया हुआ है। क्या, इस का भी तुमको कोई ध्यान है? ऐ भाई! इन्सान इसीलिये इस जगह में आया है, कि वह एक दूसरे के साथ हमदर्दी से रहे; प्रत्येक प्राणी के साथ दया का वर्ताव करे। इस लिये सख्त दिल वन कर कभी किसी प्राणी के दिल को भूल कर भी सताओ मत। और बुरे कामों से दूर रह कर, सदा नेकी किया करो ॥ २ ॥ नशाखोरी, रण्डीबाजी, और गुस्से बाजी को छोड दो। प्रत्येक प्राणी से मुहब्बत करो, और फूट को दिल से देश निकाला कर के निकाल दो। मूर्खों और धूर्तो के धोखे से बचे रहो और बुरे कामों से दूर रह कर, सदा नेकी किया करो ।३। ऐ प्राणी! यहां कौन तो तेरे माता और पिता हैं; और कौन तेरे सज्जन सखा हैं! धन माल सब का सब, यहीं का यहीं धरा रह जायगा! तेरे लिये तो अन्त मे कफन ही नसीब है! भाई! ऐसा जान कर के कभी पाप की ओर

पैर बढ़ाओ मत! और बुरे कामों से दूर रह कर सदा नेकी किया करो ॥ ४॥ संवत् १९८६ विक्रमीय में, जब मुनिराज श्री चौथमल जी का शुभागमन, सेखेकार (जिला भुसावल) में हुआ, उस समय बाजार में आप ने श्रोताओं को इस प्रकार उपदेश दिया था। ऐ भाइयो! होटलों में जा कर धर्म को कभी खोओ मत; और बुरे कामों से सदा दूर रह कर, नेकी से नेह जुड़ाये रक्खो ॥ ५ ॥

ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

❀ आदर्श मुनि ❀

इस ग्रन्थ के अन्दर प्रसिद्धवक्ता पण्डित मुनि श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज के किये हुवे सामाजिक धार्मिक, सदाचार, दयामयी आदि कई महत्व पूर्ण कार्यों का दिग्दर्शन कराया गया है। साथ ही में जैन धर्म की प्राचीनता के विषय में अनेक विदेशी विद्वानों की सम्मतियों सहित व अन्य मत के ग्रन्थों के प्रमाणों से तुलना करते हुए अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक अति उत्तम उपयोगी एवम् हर एक के पढ़ने योग्य है। इसकी तारीफ अनेक अखबार वालोंने और विद्वानों ने की है।

इस में राजा महाराजाओं के व सेठ साहुकारों के २० उम्दा आर्ट पेपर पर चित्र है पृष्ठ संख्या ४५० रेशमी जिल्द होते हुए भी मूल्य लागत मात्र से कम रू० १।) और राज संस्करण का मूल्य रू० २) रक्खा गया है डाक खर्च अलग होगा।